शिक्षा का उत्थान
शिक्षक का सम्मान
मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप

हमारा परिवेश

5

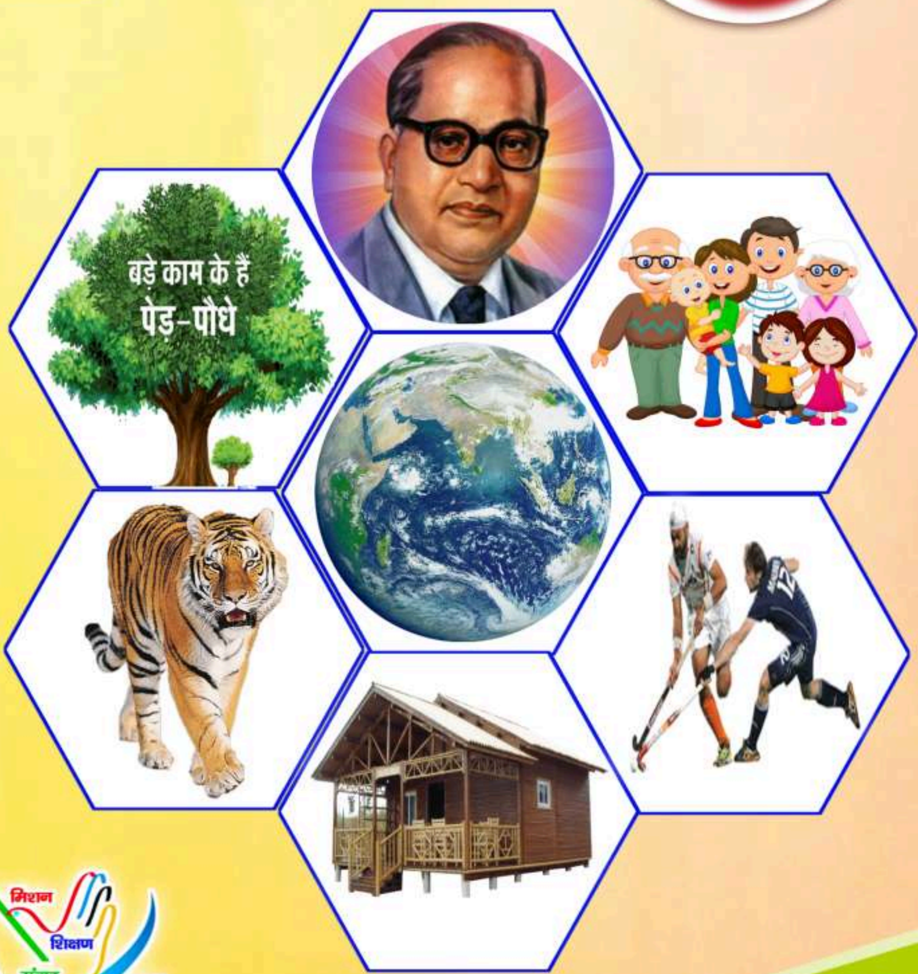

बेसिक काव्य सृजन

काव्य निर्माण
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
ब्लॉक व जनपद- बागपत

पाठ-1
परिवार कल, आज और कल

आइए जानें हम परिवार के बारे में,
छोटे-बड़े संयुक्त परिवार के बारे में।
शरद को जाना है गाँव से दूर शहर,
कमाते वक्त सोचते हैं लोग परिवार के बारे में।

उज्मा के घर हुई एक शादी,
घर में दुल्हन बन आयी एक नयी भाभी।
गोपाल को शहर जाकर गाँव की याद है आती,
गाँव में सब रह गए माँ, पापा, दादा, दादी।।

समय के साथ बदलते जातें हैं परिवार,
सदस्यों की संख्या घटती बढ़ती है।
विवाह होने पर, बच्चे होने पर,
परिवार में खुशहाली आती है।।

कभी पढ़ाई के लिए बाहर जाने पर,
मत्यु हो जाने पर, तबादला होने पर।
परिवार के सदस्यों की संख्या घटती है,
पर जिन्दगी यूँ ही चलते रहती है।।

पाठ-2
मेरा परिवार, मेरी प्रेरणा

आइए परिवार को और जानते हैं,
जब हम खुश होते हैं या उदास।
हम परिवार को बताना चाहते हैं,
परिवार होता है हमारे लिए खास।।

परिवार के सदस्य हमें हरदम,
आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं।
कुछ हमारी प्रेरणा बनकर हमें,
भविष्य की राह दिखाते हैं।।

परिवार में हम सब मिलकर,
काम करते हैं और हाथ बंटाते हैं।
माँ अगर खाना बनाए, कपड़े धोए,
तो पिताजी खेत या फेक्ट्री जाते हैं।।

किशन भैया स्कूल में संगीत सिखाते हैं,
खुद करते अपने काम, पर देख नहीं पाते हैं।
ऐसे लोग ब्रेल लिपि से पढ़ते हैं,
एक मोटे कागज पर उभरे कुछ बिंदू होते हैं।।

शारीरिक कमी के लोगों को दिव्यांग कहते हैं,
पर ये किसी से कमतर नहीं होते हैं।
सुधा चन्द्रन, रवीन्द्र जैन, शरत गायकवाड़,
ऐसे ही लोग हैं जो कभी धीरज नहीं खोते हैं।।

पाठ-3

गौरव पुरस्कार

किसी भी प्रतियोगिता में भाग लो,
पुरस्कार की इच्छा नहीं करा करते।
शारदा जब हारने से उदास हुई तो,
उसकी माँ बोली समझाते-समझाते।।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है,
पढ़ाई, खेलकूद दोनों से विकास होता है।
खेल पाठ्यक्रम विद्यालयों में भी जरुरी है,
इनडोर और आउटडोर दोनों प्रकार ही जरूरी हैं।।

क्रिकेट, हाकी, फुटबॉल जैसे खेल,
बाहर खेलते हैं, और आउटडोर कहलाते हैं।
लूडो, कैरम, शतरंज जैसे खेल घर के,
अन्दर खेलते हैं, और इनडोर कहलाते हैं।।

खेल आपस मे टीम भावना,
और सौहार्द हमें सिखाते हैं।
हारने जीतने से ज्यादा हममें,
आत्मविश्वास, दृढता जगाते हैं।।

पाठ-4
आओ मिलकर खेलें खेल

नितिन और गुनगुन दो बच्चे,
दोनों ही हैं आज खुश अपार।
नागपंचमी के अवसर पर खेलों में,
भाग लेने को हैं दोनों तैयार।।

गाँव-गाँव से लोग आये हुए हैं,
कबड्डी मे प्रतिभाग करने।
अनिकेत अच्छा खेलकर पहुँचा,
राष्ट्रीय टीम मे भाग लेने।।

29 अगस्त को हमारे देश में,
राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया जाता है।
हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, बैडमिंटन में से,
हॉकी को राष्ट्रीय खेल बताया जाता है।।

पैरा ओलम्पिक में दुनिया भर के,
दिव्यांग खिलाड़ी भाग लेते हैं।
ये खिलाड़ी हिम्मत और जज़्बे से,
शारीरिक कमजोरी जीत लेते हैं।।

खेलकूद में लगातार प्रतिभाग करना,
हमारे शरीर को स्वस्थ बनाता है।
खेल का अभ्यास हमें अनुशासित,
धैर्यवान और विनम्र बनाता है।।

पाठ-5
जीव-जन्तुओं की रोचक बातें

बच्चों जानों ज्ञानेन्द्रियाँ हैं पाँच,
त्वचा, कान, नाक, जीभ और आँख।
पक्षी या जानवर सभी के पास,
होते हैं कुछ न कुछ गुण खास।।

चील, गिद्ध, और बाज जैसे पक्षी,
हमसे चार गुना ज़्यादा देखते हैं।
सूँघने की शक्ति अच्छी होने के
कारण कुत्ते चीजें ढूँढ लेते हैं।।

तेंदुआ, चीता, बिल्ली के कान,
मामूली ध्वनि भी सुन सकते हैं।
खरगोश के कान बड़े अनोखे,
ध्वनि की दिशा मे घूम जाते हैं।।

चमगादड़ के भी तेज होते हैं कान,
दूरी का अनुमान आवाज से लगाते हैं।
मुसीबत के समय जानवर अलग,
आवाज़ का प्रयोग करते हैं।।

वैसे तो सभी जानवर रात मे सोते हैं,
पर चमगादड़ और उल्लू दिन मे सोते हैं।
कुछ जीव लम्बे समय तक नहीं दिखते,
वे मौसम के अनुसार अनुकूलन करते हैं।।

पाठ-6
वन्य जीवों का संरक्षण

हम जानते हैं जीवों के विभिन्न प्रकार हैं,
ये हमें प्रकृति द्वारा दिये गये उपहार हैं।
हम अक्सर रोज हैं इनपर निर्भर,
कुछ पालतू हैं, कुछ हैं जंगली जानवर।।

घोडा, खच्चर, ऊँट, बैल आदि,
जुताई और बोझा ढोने के काम आते हैं।
गाय, भैंस, बकरी से मिलता दूध,
और भेड से हम ऊन पाते हैं।।

पर ये हमारे मित्र धीरे-धीरे,
विलुप्त होते जा रहे हैं।
जंगल कटने के कारण संख्या,
मे कम होते जा रहे हैं।।

वन्य जीवों को बचाने के लिए,
सरकार द्वारा कानून बनाए गये हैं।
पशु-पक्षी सुरक्षित रह सकें इसलिए,
राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य बनाये गये हैं।।

सभी संकटग्रस्त प्रजातियों का रिकॉर्ड,
रेड डाटा बुक मे रखा जाता है।
डायनासोर, डोडो, मैमथ जैसी प्रजातियों,
का नाम विलुप्त की श्रेणी मे आता है।।

पाठ-7
जंगल और जनजीवन

जंगल हमारे जीवन के लिए,
बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।
ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते,
और विषैली गैस को रोकते हैं।।

जंगल पर हमारे बहुत सारे,
उद्योग निर्भर करते हैं।
कत्था, रेशम, रबर, लाख, बीड़ी उद्योग,
जंगल से कच्चा माल प्राप्त करते हैं।।

सभ्यता के आरम्भ में,
मानव जंगलों पर निर्भर था।
कन्दमूल तथा शिकार कर खाता,
और गुफाओं में रहता था।।

आग की खोज पत्थर से,
पत्थर टकराकर स्वतः हुई।
धीरे-धीरे मानव के सुख-सुविधा,
जुटाने की प्रकिया शुरू हुई।।

सरकार ने वनों को बचाने के लिए,
सामाजिक वानिकी को शुरू किया।
लकड़ी, पानी और बयार, ये जंगल के उपकार,
चिपको आन्दोलन ने यह नारा दिया।।

पाठ-8
भोज्य पदार्थों का संरक्षण

भोजन को सुरक्षित और,
संरक्षित रखना बहुत जरुरी है।
दाल, अनाज, मेवे आदि को,
सूखे, स्वच्छ डिब्बों में रखना जरुरी है।।

भोज्य पदार्थ नम और खुला,
रखने के कारण होते हैं खराब।
धूल, मक्खियाँ, फफूँद और जीवाणु,
का हो जाता है इन पर जमाव।।

आओ भोज्य पदार्थ संरक्षण की,
विधियों को भलिभाँति जानें हम।
सुखाना, प्रशीतन, उबालना जैसे,
रासायनिक प्रयोग पाश्चुरीकरण को जानें हम।।

संरक्षण से भोजन को लम्बे समय,
तक सुरक्षित रखा जा सकता है।
देश में अनाज की कमी न हो इसलिए,
सरकार द्वारा इसका भण्डारण किया जाता है।।

हमारे भोजन की सभी सामग्री,
किसान द्वारा मेहनत से उगायी जाती है।
इसलिए भोजन को बर्बाद ना करें,
यह बात बार-बार समझाई जाती है।।

पाठ-9
हम और हमारी फसलें

हमारी फसलें अलग-अलग मिट्टी,
और मौसम के अनुसार उगायी जाती हैं।
सभी फसलें कड़ी मेहनत से किसान,
हमारे अन्नदाता द्वारा उगायी जाती हैं।।

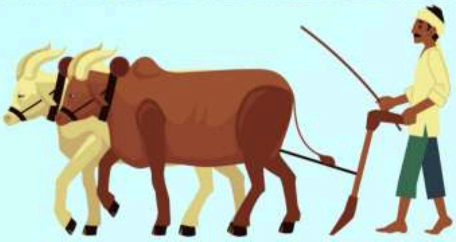

चार तरह की होती मिट्टी,
बलुई, चिकनी, सिल्ट और दोमट।
मौसम के अनुसार हम इन्हें,
कहते हैं खरीफ, रबी और जायद।।

फसलों और पौधों को पानी,
देने की विधि कहलाती है सिंचाई।
नहरें, नदी और बिजली पम्पों,
द्वारा की जाती हैं सिंचाई।।

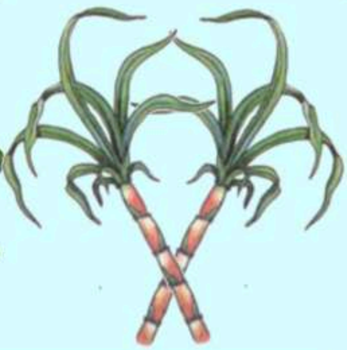

फसलों की सिंचाई के नये तरीकों में,
ट्रिप और स्प्रिंकलर नाम आते हैं।
रासायनिक खाद की जगह जैविक खाद,
खेतों की मिट्टी को और उपजाऊ बनाते हैं।।

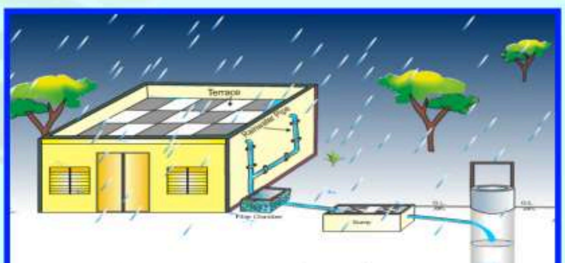

पानी की समस्या के कारण,
अपनाया जा रहा है जल संरक्षण।
जल की कमी दूर करने के लिए,
जरुरी है जल संचयन या पुनर्भरण।।

पाठ-10
पेड़-पौधों का भोजन

सभी जीव-जन्तु उर्जा,
भोजन से ही पाते हैं।
आइए जानें पौधे अपना,
भोजन कैसे बनाते हैं?

पौधे अपना भोजन प्रकाश संश्लेषण,
नामक क्रिया से बनाते हैं।
हरी पत्तियों के क्लोरोफिल,
इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।।

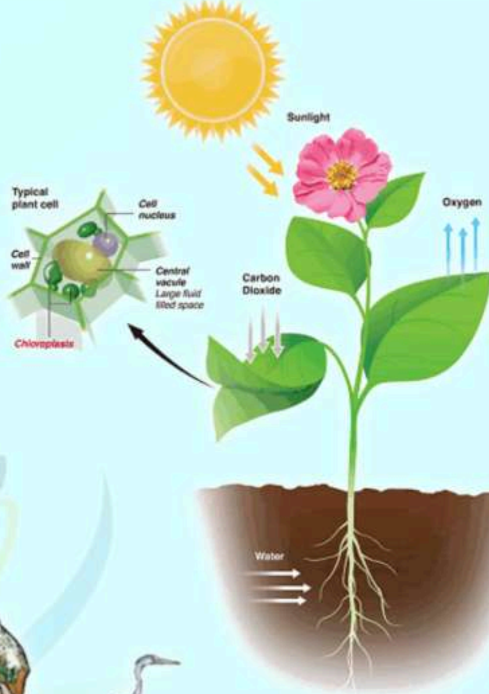

इस प्रक्रिया में आक्सीजन निकलती है,
जो वातावरण को शुद्ध रखती है।
जड़ो द्वारा अवशोषित अतिरिक्त जल,
पत्तियाँ वाष्पोत्सर्जन से निकालती हैं।।

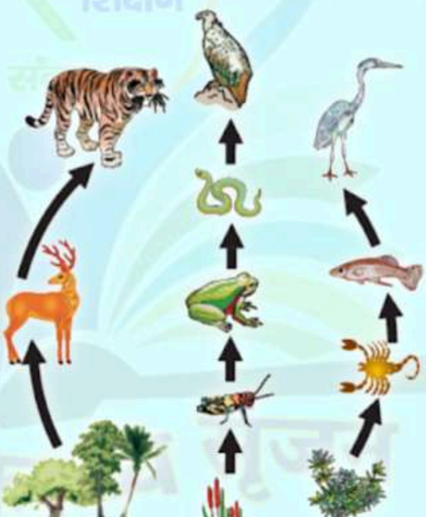

कुछ पौधे थोड़े अलग होते हैं,
ये कीट पतंगों का भोजन करते हैं।
वीनस फ्लाई टैप, नेपन्थीज,
इसी श्रेणी में आते हैं।।

सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से,
भोजन हेतु एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।
भोजन की इसी निर्भरता को,
हम खाद्य श्रृंखला कहते हैं।।

पाठ-11

ऐसे भी होते हैं घर

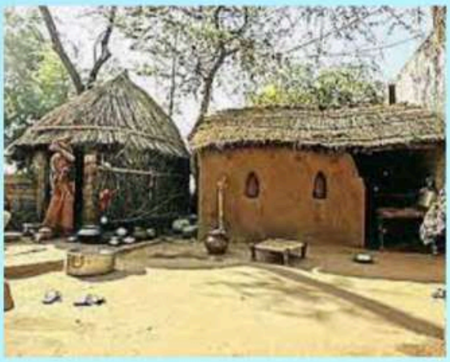

हमको सर्दी, गर्मी, बरसात,
आँधी, बाढ़ से बचाता है घर।
कहीं भी चले जायें हम पर,
वापस आते हैं यहीं लौटकर।।

इनके कई प्रकार होते हैं,
जैसे कच्चे या पक्के घर।
तैरते हुए या पत्थर के घर,
बाँस के घर या टेंट के घर।।

बारिश वाली जगह बनाये,
जाते है बाँस के घर।
जहाँ बर्फ ही बर्फ होती है,
बनते हैं इग्लू नाम के घर।।

घुमन्तू लोग नहीं बनाते स्थायी घर,
इसलिए अपनाते हैं टेंट के घर।
अमेजन में बरसात और गर्मी के कारण,
लोग बनाते हैं बिना दीवार के घर।।

पाठ-12
आपदाएँ और उनसे बचाव

अचानक आने वाले संकट को,
आपदा नाम से जाना जाता है।
ऐसी घटनाओं से सामान्य जीवन,
अस्त-व्यस्त हो जाता है।।

प्राकृतिक आपदाओं में भूकम्प, सूखा,
बाढ़, आँधी, तूफान आदि आते हैं।
मानवजनित आपदाओं में आग, दंगा,
प्रदूषण, रेल दुर्घटनाएँ आती हैं।।

हमें आपदाओं से बचने के लिए,
हमेशा तैयार रहना चाहिए।
भोजन, पेयजल, रोशनी आदि की,
व्यवस्था को सही रखना चाहिए।।

भूकम्प से बचने के लिए तुरन्त,
खुले स्थान में जाएँ, सीढ़ियों का इस्तेमाल करें।
आग लग जाये तो, रेंगते हुए निकलें,
अग्निशमन यन्त्र, बालू आदि का इस्तेमाल करें।।

बाढ़ आने पर ऊँचे स्थान पर जाएँ,
बिजली के तारों से दूर रहें।
आपदा पीड़ित इलाकों में सरकारी मदद,
पहुँचाने के लिए सहयोग करें।।

पाठ-13
जल है तो कल है

हमारे जीवन के लिए बहुत,
ही आवश्यक होता है जल।
पीने के पानी की व्यवस्था,
रखते हैं सार्वजनिक स्थल।।

पेड़-पौधों और फसलों की वृद्धि,
के लिए भी जल की आवश्यकता होती है।
'जल ही जीवन है' जैसे शब्दों पर,
विचार करने की आवश्यकता अभी है।।

भूमिगत जल के लगातार निकलने से,
जल की कमी का सामना कर रहे हैं।
इसलिए जल को संरक्षित करने के,
नये तरीकों की खोज कर रहे हैं।।

जल की कमी को दूर करने के लिए,
जरुरी है जल का संचयन एवं पुनर्भरण।
तालाबों में वर्षा का जल इकट्ठा करें,
व्यर्थ ना बहाएँ, जल का करें संरक्षण।।

पाठ-14

जल के गुण एवं जल-प्रदूषण

जल एक तरह का द्रव्य पदार्थ है,
जिसका कोई आकार नहीं होता।
तरल पदार्थ को आयतन में नापते हैं,
इसमें सब घुल जाता है।।

जो पदार्थ घुलते हैं उन्हें,
विलेय कहा जाता है।
जिस द्रव्य में ये घुलते हैं,
उन्हें विलायक कहा जाता है।।

द्रव्य में विलेय पदार्थ के,
घुलने पर बनता है विलयन,
अविलेय पदार्थ जैसे रेत, चॉक,
नहीं बनाते हैं विलयन।।

जल में कूड़ा-करकट मिलकर,
हो जाता है जल-प्रदूषण।
दूषित जल से टायफाइड, हैजा,
जैसे रोग ले लेते हैं जन्म।।

पानी की पीने योग्य बनाना है,
तो उबालकर कर ठण्डा कर छानना है।
टंकियों और कुओं का पानी,
दवा डालकर पीने के लिए बनाना है।।

पाठ-15
यात्रा

एक जगह से दूसरी जगह,
जाने को हम यात्रा कहते हैं।
यात्रा में इस्तेमाल होने वाले,
साधन को वाहन कहते हैं।।

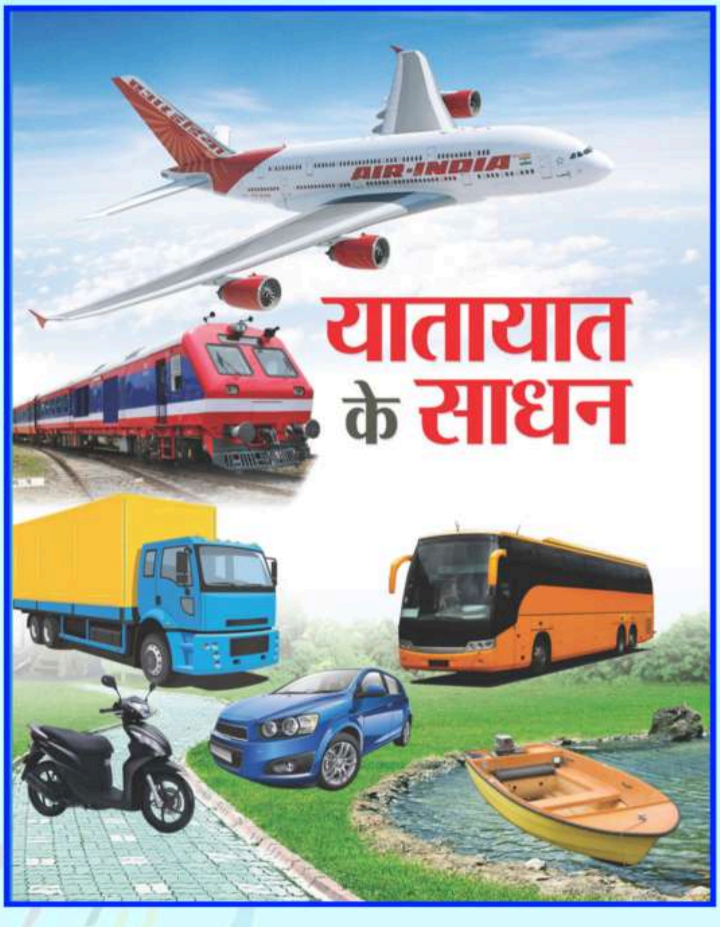

बस, ट्रैक्टर, ट्रक जमीन पर,
चलने वाले यात्रा के साधन हैं।
पेट्रोल, डीजल, और सी० एन० जी०,
इनको चलाने वाले ईंधन हैं।।

ट्रैक्टर खेती के काम आता है,
ट्रॉली लगाकर बोझ ढोने के लिए।
बस सवारी ले जाने के लिए और,
कार, स्कूटर निजी यात्रा के लिए।।

पेट्रोल, डीजल की जगह सी० एन० जी०,
के प्रयोग से प्रदूषण कम हो जाएगा।
आने वाली पीढी के लिए ईंधन बचाएँ,
ये संसाधन एक दिन खत्म हो जाएगा।।

पाठ-16
बीज ही बीज

कुछ फल जैसे आम, जामुन,
बेर में एक होता है बीज।
कुछ फल जैसे पपीता, अनार,
अमरूद में होते हैं कई बीज।।

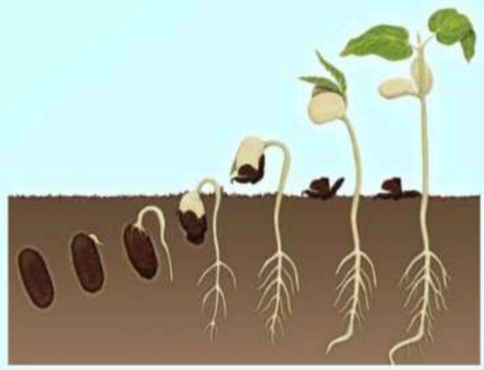

बीज से पौधा बनता है,
पर हर बीज नहीं फलता है।
बीज के भाग मूलांकुर से जड़,
और प्रांकुर से तना बनता है।।

बीज को अंकुरित होने के लिए,
हवा, पानी और उचित ताप चाहिए।
विभिन्न पौधों को उगाने के लिए,
भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ चाहिए।।

धान, मक्का, गेहूँ, चना आदि की,
फसल के लिए दाने मिट्टी में बोते है।
जो बीज खराब हो जाते हैं,
वे कभी अंकुरित नहीं होते है।।

पाठ-17
विश्व में भारत

हमारी पृथ्वी सौरमण्डल का,
एक अनोखा ग्रह कहलाता है।
पृथ्वी पर लगभग 21 प्रतिशत स्थल,
और 79 प्रतिशत जल आता है।।

पृथ्वी पर पाँच महासागर हैं,
प्रशान्तत, अटलांटिक, आर्कटिक,
हिन्द और दक्षिणी महासागर जिनमें,
सबसे बड़ा प्रशान्त महासागर है।।

पृथ्वी पर सात महाद्वीप हैं,
जिनमें एशिया, यूरोप, आस्ट्रेलिया हैं,
अफ्रीका, दक्षिण और उत्तरी अमेरिका,
और बर्फ़ से ढका अंटार्कटिका है।।

भारत सबसे बड़े महाद्वीप एशिया में है,
क्षेत्रफल के हिसाब से भारत सातवाँ है।
विश्व की लगभग 59 प्रतिशत,
एशिया में बसी जनसंख्या है।।

भारत का दक्षिणी भाग तीन,
तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है।
पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में,
अरब सागर दूर तक बिखरा है।।

भारत सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है,
भारत की राजधानी नई दिल्ली है।
यहाँ विभिन्न प्राकृतिक और सांस्कृतिक,
विविधताओं से सम्पन्न भूमि है।।

भारत के पर्वतीय भाग का विस्तार,
जम्मू-कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक है।
उत्तर का विशाल मैदान उपजाऊ है,
इसका विस्तार पंजाब से असम तक है।।

भारत के पश्चिमी भाग में,
थार के मरूस्थल का विस्तार है।
दक्षिण मे बुन्देलखण्ड, नागपुर, मालवा,
दक्कन का लावा पठार है।।

भारत मे कई तरह के,
वन भी पाये जाते हैं।
जिनमें सदाबहार, पतझड, मरुस्थलीय,
पर्वतीय व डेल्टा वन आते हैं।।

जनसंख्या विस्फोट के कारण
वन्य जीवन का विनाश हो रहा ।
सरकार की पहल द्वारा वन्य जीवो
की सुरक्षा और संरक्षण हो रहा है।।

पाठ-18
भारतीय संविधान व शासन व्यवस्था

देश के काम काज को चलाने के लिए,
बने बहुत से कानून और नियम।
इन सभी नियमों को मिलाकर बना,
जिसे संविधान कहते हैं हम।।

डा० राजेंद्र प्रसाद को संविधान,
सभा का अध्यक्ष बनाया गया।
डा० भीमराव अम्बेडकर ने,
संविधान का प्रारूप बनाया।।

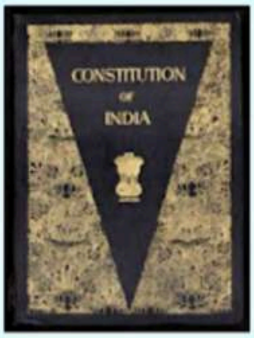

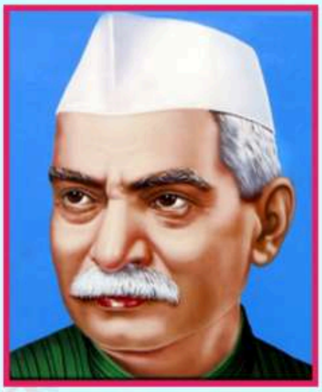

26 जनवरी 1950 को हमारा,
संविधान लागू किया गया।
तब से हर वर्ष इसे गणतन्त्र,
दिवस के रूप मे मनाया गया।।

सरकार के तीन महत्वपूर्ण अंग हैं,
कानून का निर्माण, व्यवस्थापिका का कार्य है।
कानून लागू करना, कार्यपालिका का और,
न्याय करना न्यायपालिका का कार्य है।।

कार्यपालिका का प्रमुख राष्ट्रपति होता है,
राष्ट्रपति तीनों सेनाओं का सेनापति होता है।
देश का सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में है,
इसके न्यायाधीशों का चयन राष्ट्रपति द्वारा होता है।।

पाठ-19

राष्ट्रीय एकता

हमारा देश विविधताओं में एकता,
से भरा सन्दर और विशाल देश है।
यहाँ पर सभी त्यौहार मिलजुलकर,
मनाना हमारी एकता का सन्देश है।।

स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस,
गाँधी जयन्ती राष्ट्रीय पर्व कहलाते हैं।
हर राज्य, धर्म, जाति, प्रांत के लोग,
ये तीनों पर्व धूमधाम से मनाते हैं।।

राष्ट्रीय पर्वों पर हम तिरंगा फहराते हैं,
हमारे राष्ट्रीय प्रतीक हमारी एकता बताते हैं।
राष्ट्र ध्वज-तिरंगा, राष्ट्रीय गान जन-गण-मन,
राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् हमारी शान बढाते हैं।।

हमारा राष्ट्रीय पशु है बाघ और,
राष्ट्रीय पक्षी हम मोर को कहते हैं।
राष्ट्रीय चिन्ह है अशोक स्तम्भ,
राष्ट्रीय पुष्प कमल को कहते हैं।।

हमारी तीन सेनाऐं करती हैं राष्ट्र सुरक्षा,
थल सेना, जल सेना और वायु सेना।
तीनों सेनाओं के अध्यक्ष होते हैं राष्ट्रपति,
देश को हर तरह सुरक्षित करती हैं सेना।।